जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

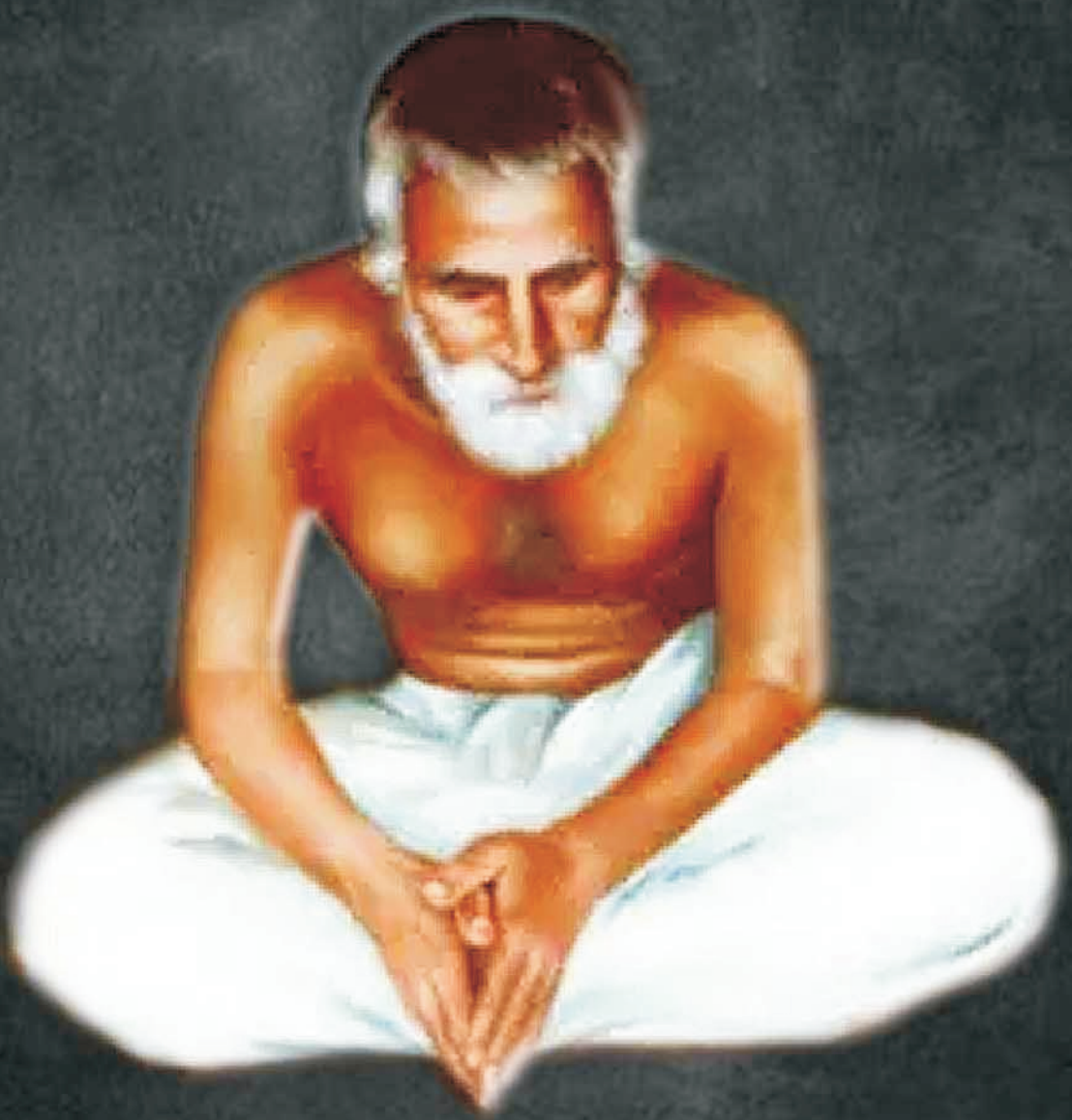

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

अवैध स्त्री-संगी का प्रायश्चित

इससे कुछ दिन बाद ह*** नामक एक व्यक्ति ने श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के पास पुनः आकर धर्मशाला की एक कोठरी में रहने की प्रार्थना की। धर्मशाला के अधिकारियों ने उत्तरखण्ड की सभी कोठरियाँ श्रील बाबाजी महाराज के अधिकार में रखी थीं अर्थात् उनकी अनुमति के बिना कोई भी इन कोठरियों में रह

नहीं सकता था। ह*** एक कोठरी में वास करने लगा। श्रील बाबाजी महाराज ने सभी को सुनाकर ह*** को कह दिया, "जिसकी हरिभजन की इच्छा है, वह असत्संग नहीं करे। असत्संग रखकर, सत्संग का अभिनय भी करेंगे, या छिप छिपकर धर्म-ध्वजियों का दुःसंग करेंगे, जिनका इस प्रकार का विचार है, उनके अनर्थ और भी बढ़ जाते हैं। इस प्रकार की कपटता करके, अपनी ही आँखों के सामने हज़ारों लोगों का अमंगल

होते हुए मैंने देखा है। बहुत कष्ट सहन करके, निरन्तर सत्संग में रहकर, श्रवण-कीर्तन करने से ही हरिनाम की सेवा व रक्षा की जाती है।"

यह सारी बातें सुनकर भी ह*** छिप-छिपकर अन्य धर्मध्वजियों के साथ बातचीत करता था। इससे श्रील बाबाजी महाराज मन मन में उसके प्रति बहुत विरक्त { दुःखी होकर चिढ़ जाना } हो गए थे। ह*** को खूब भयंकर बीमारी हो गई। उसका कष्ट देखकर परम कृपालु

श्रील बाबाजी महाराज ने अपने एक सेवक को ह*** की सेवा शुश्रुषा करने के लिए कहा, लेकिन दो-चार दिन बाद देखा गया कि एक युवती आकर ह*** की देख-रेख कर रही है। अन्तर्यामी श्रील बाबाजी महाराज यह जान गये एवं अपने उस सेवक को पूछा, – "ह*** की सेवा कौन कर रहा है?" सेवक ने कहा, 'मैं ह*** की सेवा करता हूँ, और कोई नहीं करता। महाराज ने वज्र के समान गम्भीर स्वर में पूछा,– "और क्या कोई ह*** के पास आता नहीं?"

तब उक्त सेवक ने कहा,—"हाँ, एक महिला आती है।" श्रील बाबाजी महाराज ने उक्त सेवक को कहा, "जब यह महिला स्वयं ही आकर ह*** की सेवा कर रही है, तब तुम और किसी कार्य के लिए ह' के पास मत जाना।" श्रील बाबाजी महाराज ने तब ह*** को बुलाकर कहा, "तुम यदि यहाँ रहोगे, तब मुझे पन्द्रह रुपये देने होंगे, रुपये न देने पर इसी समय कहीं दूसरी जगह चले जाओ, कारण तुम यदि मर जाओ, तब तुम्हें फेकने के लिए पन्द्रह रुपये

खर्च होंगे !"

इसके बाद श्रील बाबाजी महाराज स्वयं ही कहने लगे,– "इसको हमारे यहाँ जगह न देने से वह महिला ह*** को धीरे-धीरे अपने घर ले जाएगी,– इस प्रकार की उसकी इच्छा है वैसा होने से ही स्वतन्त्र भाव से वह उसकी सेवा कर सकेगी।" ह*** बहुत कष्ट भोगने के बाद रोग मुक्त होकर वृन्दावन चला गया। श्रील बाबाजी महाराज ने ह*** की उपेक्षा कर उसके वृन्दावन जाने में किसी प्रकार की बाधा नहीं दी। वृन्दावन

में कुसुम-सरोवर पर बाबाजी महाराज के पूर्व परिचित दी*** दास नाम के एक व्यक्ति के पास 'ह*** रहने लगा। वन परिक्रमा करके एक दिन दी*** के पास आकर कहने लगा,– "मैंने वेष ग्रहण करके परस्त्रीसंग किया है, मेरा क्या प्रायश्चित है, बताएँ।" दी*** ने कहा, "तुम प्राण त्याग करो और कोई प्रायश्चित नहीं है, यही महाप्रभु की व्यवस्था है।" दी*** ने तब गोवर्धन से एक तोला अफीम लाकर उसे खा लिया एवं पसीने से तरबतर होकर,

काँपते-काँपते पुनः दी*** के पास आकर अपने प्राण त्यागने के लिए अफीम खाने की बात बताई। कुछ समय के बाद वह छटपटाता हुआ मर गया। इसके साथ साथ ही दी*** को भी एक बहुत भयानक एवं जानलेवा बीमारी लग गई। **गोस्वामी तब वृन्दावन गये थे, उन्होंने दी*** की चिकित्सा कराकर उसे बचा लिया। दी*** पुनः स्वस्थ होकर नवद्वीप में श्रील बाबाजी महाराज जी के पास उपस्थित हुआ। तब श्रील बाबाजी महाराज ने कहा,– "तुम दूसरी

जगह जाकर-रहो, मेरे पास रहने से तुम्हारे प्राण नहीं बचेंगे; कारण, मेरे पास अभी दो डाकू हैं। एक का नाम है न*** और एक का नाम है ल***। ये मेरे सेवक हैं, बाहर के लोगों के पास जाकर ऐसा प्रचार करते हैं। ये रात में कहाँ रहते हैं वह मैं नहीं जानता। एक दिन गहन रात को मैंने जल के लिए इन्हें आवाज़ लगाई। कई बार चिल्लाने पर भी इनकी कोई आवाज़ नहीं आई। दूसरे दिन इन्हें यह बात बताने पर ये कहने लगे,– "हम तो कुछ भी सुन नहीं पाए।" इधर

दी*** दास ने श्रील बाबाजी महाराज द्वारा उपेक्षित होकर एक महिला के घर में आश्रय ग्रहण कर लिया। एक दिन लोगों ने आकर श्रील बाबाजी महाराज को बताया कि एक युवती दी*** दास की सेवा शुश्रुषा कर रही है। यह सुनकर श्रील बाबाजी महाराज अत्यन्त क्रोधित होकर कहने लगे– "मेरे पास आकर बिलकुल भी यह सब बातें मत कहो।"

दी*** के पास कुसुम सरोवर में और एक वेषधारी रहता

था, वह व्यक्ति भी श्रील बाबाजी महाराज द्वारा उपेक्षित हुआ था। सुना जाता है, कुसुम सरोवर में रात को कुछ लुटेरों ने उक्त वेषधारी की आँखें फोड़कर उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दिये। उक्त वेषधारी ने शायद कुछ चोरी का माल छिपाकर अपने पास रखा हुआ था। इसलिए लुटेरों ने उसकी इस प्रकार निष्ठुरता से हत्या कर दी।

श्रीलगुरुदेव